Plagiarism Checker X - Report

Originality Assessment

0%

Overall Similarity

Date: Dec 3, 2023
Matches: 0 / 2059 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found, your document looks healthy.

Verify Report:
Scan this QR Code

सामाजिक विज्ञान अनुसंधान की आवश्यकता एवं समस्याएँ: अर्न्तनुशासन पद्धति के सम्बन्ध में

डॉ0 विभा चौहान
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र, जे0एस0 विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद, फिरोजाबाद
ई-मेल: cvibha6664@gmail.com

सारांश- सामाजिक विज्ञान अनुसंधान एक महत्वपूर्ण और गहरा क्षेत्र है जो समाज में घटित घटनाओं, संगतियों और संरचनाओं को विश्लेषित करके समझने का प्रयास करता है। इसका उद्देश्य सामाजिक परिवर्तनोंए संघटनों और समस्याओं का अध्ययन करना है ताकि समाज में सुधार के लिए नीतियाँ बनाई जा सकें। इसके साथ ही अर्न्तनुशासन पद्धति सामाजिक विज्ञान अनुसंधान को गहराई से अध्ययन करने का एक प्रभावी तंत्र प्रदान करती है।

मानव जीवन का सर्वाधिक विशिष्ट लक्षण है, उसका सामाजिक चरित्र। मानव समाज में पैदा होता है, समाज में जीता है और समाज में ही मृत्यु को प्राप्त होता है। समाज हालाँकि बाहर से बहुत सरल मालूम पड़ता है, लेकिन वह सरल होता नहीं है। इसे सही तौर पर समझने के लिए व्यवस्थित अध्ययन एवं अनुसंधान की आवश्यकता पड़ती हैं मोटे तोर पर कहा जा सकता है कि सामाजिक जगत या समाज के बारे में किया जाने वाला अनुसंधान सामाजिक अनुसंधान है। यह सामाजिक घटनाओं अथवा तथ्यों का वस्तुनिष्ठ एवं व्यवस्थित ढ़ंग से किया जाने वाले वर्णन विश्लेषण एवं व्याख्या है।

शब्द कुंजी- अर्न्तनुशासन, सामाजिक विज्ञान, अर्न्तसम्बन, परिशुद्धता

प्रस्तावना- विज्ञान के क्षेत्र में असीम ओर आश्चर्यजनित प्रगति एवं नवीन तकनीकी यंत्रों के विकास के फलस्वरूप सामजिक विज्ञान के क्षेत्र में भी एक क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है। जहॉ वैज्ञानिक सिद्धान्तों को चुनौतियां दी जा रही है और उनकी शाश्वतता खण्डित होती नजर आ रही है। यहॉ सामाजिक विज्ञान क्षेत्र में सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक सिद्धान्तों, मूल्यों तथा मान्यताओं में गहन परिवर्तन आना स्वाभाविक है। यह परिवर्तन एक युगकारी क्रांति है। अनुसंधान का उद्देश्य वैज्ञानिक पद्धतियों द्वारा प्रश्नों के उत्तरों की खोज है, क्योंकि मानव केवल एक जिज्ञासु प्राणी ही नहीं बल्कि एक खोजमूलक प्राणी भी है।

सामाजिक अनुसंधान वैज्ञानिक पद्धति के प्रयोग के माध्यम से सामाजिक घटना, तथ्य या व्यवहार के सम्बन्ध में नये तथ्यों के खोज, पुराने तथ्यों के परीक्षण उनके बीच अनुक्रम, अर्न्तसंबंध व कार्यकारण सम्बन्ध की व्याख्या, तथा अनुसंधान की नवीन तकनीकी, उपकरणों, अवधारणाओं एवं सिद्धान्तों के विकास की दिशा से किया गया व्यवस्थित प्रयास है। वैज्ञानिक शब्दावली में कहें तो सामाजिक अनुसंधान

समाज वैज्ञानिकों के अन प्रयासों का व्यवस्थित संग्रह है, जिनके तहत वे जटिल मानव संम्बन्धों एवं व्यवहारों को अवलोकनि, विश्लेषित एवं सामान्य व भविष्य कथनात्मक सूत्रों व सिद्धान्तों में संक्षेपीकृत है। ''सत्य को पाने के लिए कोई सक्षिप्त मार्ग नहीं है, संसार के ज्ञान को पाने का कोई मार्ग नहीं है, सिवाय उसके जो कि वैज्ञानिक विधि के द्वारा शोध के द्वार में से होकर गुजरता है।'' ज्ञान के क्षेत्र में शोध अपरिहार्य है। ज्ञान की विभिन्न शाखाओं में शोध का महत्व दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। अनुसंधान एक ऐसा व्यस्थित तथा नियंत्रित अध्ययन है, जिसके अन्तर्गत सम्बन्धित चरों तथा घटनाओं का अन्वेक्षण तथा विश्लेषण वैज्ञानिक विधि द्वारा किया जाता है तथा सिद्धान्तों की रचना की जाती है। अनुसंधान की महत्ता का प्रमुख कारण यह है कि प्रत्येक युग में नये तथ्य, नये विचार आविष्कृत हुए है। मानव की एक ऐसा प्राणी है, जो अपने चारों ओर विद्यमान सभी प्रकार की घटनाओं का कारण जानने का प्रयत्न करता तथा उन नियमों को ढूढने में व्यस्त रहता है, जो हमारे सभी प्रेरणाओं का वास्तविक आधार है।

अनुसंधान के आवश्यक तत्व:

शोध एक ऐसा प्रक्रिया है जिसमे किसी भी विशिष्ट लक्ष्यों या उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अनेक विषियों की मदद से कब, क्यों कैसे और कौन का उत्तर खोजा जाता है। सामाजिक विज्ञान शोध एक ऐसी पद्धति है जिसके अन्तर्गत नये तथ्यों की खोज करने के साथ ही पुराने तथ्यों की पुर्नपरीक्षा और सत्यापन का कार्य किया जाता है। शोध एक ऐसी वैज्ञानिक विधि है जिसके द्वारा जीवन में व्याप्त विभिन्न प्रकार की घटनाओं की प्रकृति उनके अंर्तसम्बन्धों तथा उसमें अंतर्निहित प्रक्रियाओं को पक्षपात- रहित रूप से विश्लेषण करने एक सामान्य सिद्धान्त प्रतिपादित किया जा सके। सामाजिक विज्ञान अनुसंधान के चार तत्व हैं -

(1) जिज्ञासा।

(2) कार्यकारण के सम्बन्धों को पता लगाने की इच्छा।

(3) नवीन परिस्थितियों का उत्पन्न होना।

(4) नवीन पद्धतियों की खोज तथा प्राचीन पद्धतियों की परीक्षा।

शोध की कुछ मान्यताऐं हैं जिनमे कार्यकारण की सम्बन्ध, निष्पक्षता की सम्भावना, घटनाओं की क्रमबद्धता और आदर्श प्रतिरूपों की सम्भावना आदि प्रमुख है। अनुसंधान प्रक्रिया और तकनीकी के मध्य घनिष्ट सम्बन्ध है। अनुसंधान कार्य के गहनता, सूक्ष्मता एवं परिशुद्धता को दृष्टि में रखते हुए यह अनिवार्य हो जाता है कि हम इसका संचालन शुद्ध एवं सही ढ़ंग से करे। आज सामाजिक विज्ञान में शोध कार्य तीव्र गति से किये जा रहे है। अतःआवश्यकता इस बात की जा रही है जो भी अनुसंधान

सामाजिक विज्ञान में संचालित किये जायें वे व्यवस्थित, तार्किक एवं उपयोगी हो ताकि भविष्य में किये जाने वाले अनुसंधानों को मार्गदर्शन मिल सके, परन्तु यह नहीं भूलना चाहिए कि अनुसंधान समस्त कार्य पर मेथोडोलोजिस्ट पर निर्भर करता है। कहने का तात्पर्य यह है कि पद्धति के ज्ञान के अभाव में अन्वेषण कार्य फलदायक सिद्ध नहीं हो सकता।

अर्न्तअनुशासन पद्धति- इसमे सन्देह नहीं कि आज जो शोध कार्य सामाजिक विज्ञानों में हो रहे है, उसमे शोधकर्ता, शब्दावली का प्रयोग स्वतंत्र एवं गलत ढ़ंग से करता है, जिसके कारण सामाजिक विज्ञानों में विस्तार की विशेष रूप से आवश्यकता है। इसलिए सामाजिक वैज्ञानिकों को इस दिशा में कदम रखना जरूरी है कि वे अपने अनुशासन के लिये स्पष्ट भ्रान्तिहीन, शुद्ध एवं सर्वमान्य शब्दावली का विकास करें। इसमे विकास के लिए रीति विज्ञान भूमिका निश्चिन्देहात्मक महत्वपूर्ण है।

प्राकृतिक विज्ञानों की तुलना में सामाजिक विज्ञानों में प्रयुक्त किये जाने वाले वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग अपनी सीमाओं में करना पड़ता है। इस पृष्ठाभूमि में उन कारणों को जानना आवश्यक है, जिससे शोध रीति को पढ़ा जा सकता है। जिनमें (1) शोध की परिशुद्धता में वृद्धि करने के लिये, (2) औपचारिक प्रशिक्षण प्रदान करना, (3) उद्देश्य प्राप्ति में सहायक (4) अंतःअनुशासनीय कार्य की सहायता पर सामाजिक विज्ञानों की प्रगति आदि प्रमुख है। इनमें अर्न्तुशासनात्मक अनुसंधान पद्धति की आवश्यक क्यों हुई? अन्तर्नुशासनीय अनुसंधान में इसकी कार्यपद्धति के सम्मुख कौन सी समस्याऐं आती है, क्या अन्तअर्नशासनीय अनुसंधान से सामाजिक विज्ञान प्रगति कर सकेगा? आदि प्रश्नों पर विचार करना आवश्यक है।

प्रत्येक विज्ञान की अध्ययन विधियों भी अलग-अलग होती है। उनका अपना इतिहास होता है, अपनी स्वयं की मौलिक धारणायें, स्वयं की शब्दावली ओर स्वयं का अनुशासन होता है। ''जब हम किसी अनुसंधान में विभिन्न विज्ञानों के सिद्धान्तों एवं पद्धतियों का प्रयोग करते है तो उसे अर्न्तनुशासन प्रणाली कहते हैं।'' अर्न्तअनुशासनीय शोध में विभिन्न विज्ञानों के विशेषज्ञ अपनी-अपनी सेवाओं को इस प्रकार देते हैं ताकि उनकी विधियों में एकीकरण स्थापित हो सके। बिना समन्वय के हम उसे सहकारी पद्धति के नाम से नहीं जान सकते है। आर्केस्टा में अलग-अलग वाद्ययंत्र काम करते हुए भी एकता स्थापित करते है जिसके द्वारा ही संगीन की रचना होती है।

अर्न्तअनुशासन पद्धति की आवश्यकता:

कोई भी विज्ञान अपने आप में पूर्ण नहीं है। कोई विज्ञान इस बात का दावा नहीं कर सकता कि सभी समस्याओं के हल का उपाय उसके पास है, अनेक क्षेत्रों में वैज्ञानिक भी एक सामान्य व्यक्ति के समान है। यदि वह उसमे प्रयुक्त वैज्ञानिक विधि के गूढ़ अर्थ को जाने बिना केवल अपने निजी क्षेत्र

की वैज्ञानिक प्रक्रिया का उपयोग करता है, तो वह इस क्षेत्र में किसी भी अन्य व्यक्ति के समान ही घोर परम्परावादी है। कहने का तात्पर्य यह है कि अन्तर्नुशासनीय पद्धति द्वारा अन्य विज्ञानों की सहायता लेना आवश्यक एवं उपयोगी है।

अन्तर्नुशासनीय पद्धति अध्ययन में वस्तुपरकता लाने के लिए आवश्यक है। इसके द्वारा समस्या का अध्ययन विभिन्न दृष्टिकोणों से हो जाता है जिससे त्रुटि उत्पन्न होने की सम्भावना नहीं रहती है। इस प्रकार तुलनात्मक अध्ययन से वांछित फल को प्राप्त किया जा सकता है। अन्तर्नुशासनीय अनुसंधान वर्तमान में जीवन में जटिलतापूर्वक बनने हुए सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक कारकों के अध्ययन तथा विवेचन को सहज बना देता है।

अन्तर्नुशासनीय शोध द्वारा विविध उपागमों तथा अनुशासनीय दृष्टिकोणों से समस्या का समुचित और सर्वांगीण अध्ययन करना सम्भव होता है। इसके द्वारा व्यक्तिगत पक्षपातों और विशेष रूपा से एकपक्षीय स्पष्टीकरणों को रोका जा सकता है। जब अध्ययन की समस्या का सम्बन्ध अनेक अनुशासनों से होता है, तब इसका प्रयोग कर एक समुचित हल निकाला जा सकता है।

अधिकतर सामाजिक विज्ञान अनुसंधान में विषय सामग्री और पद्धतियाँ विषय से सम्बन्धित समस्याऐं एवं स्वयं की होती है ताकि वे पद्धतियों अधिक लाभप्रद सिद्ध हो सके। समस्या के विभिन्न पहलुओं का समुचित एवं सुव्यवस्थित विश्लेषण करने के लिए अन्तुर्नशासनीय पद्धति का समावेश किया जाता है, इससे लाभ कि अन्य अनुशासनों की अच्छी-अच्छी बातों तथा उपयोगी सामग्री से समस्या विशेष का क्षेत्र व्यापक हो जाता है और उनका समाधान भी स्पष्ट प्रतीत होता है।

प्रत्येक विज्ञान की अध्ययन विधि और दृष्टिकोण में अन्तर होता है जैसे राजनीति विज्ञान का सम्बन्ध राज्य, सरकार और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं से है, तो समाजशास्त्र मनुष्य का अध्ययन एवं सामाजिक प्राणी के रूप में करता है और अर्थशास्त्री मनुष्य के भौतिक जीवन के रूप में करता है। अतःअधिकांश सामाजिक विज्ञानों के अध्ययन का केन्द्र मनुष्य है, इनके दृष्टिकोण भिन्न है तथा वे उसके विविध पहलुओं का अध्ययन करते हैं।

अर्न्तअनुशासन पद्धति की समस्याऐं:

अर्न्तअनुशासनीय अनुसंधान में राजनीतिक विशेषज्ञ, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री तथा मनोवैज्ञानिक आदि अपने-अपने विज्ञान के अनुशासन का पालन करते हुए समन्वय स्थापित करने की कोशिश करते है। अतःसामाजिक विज्ञान शोध में अर्न्तअनुशासन का विशेष महत्व हैं लेकिन प्रश्न यह उठता है कि इसकी कार्यपद्धति में कार्यपद्धति की अनेक समस्यायें जो इस प्रकार हैं -

1) प्रत्येक विषय के अनुसंधानकर्ता का व्यक्तित्व एवं उद्देश्य भिन्न होते हैं, अतःसमन्वय करने की

समस्या उठ खड़ी होती है।

2) प्रत्ययवादीकरण की समस्या वशिेष महत्वपूर्ण है, क्योंकि विश्लेषणात्मक चतिन के वचिारों या यंत्रों को संगठति करना तथा वभिन्नि वषियों के दृष्टकिोणों के उचति प्रकार से समावेश करना सुगत कार्य नहीं होता। प्रो0 डी0पी0 मुखर्जी का कथन है कि ''सभी सामाजकि अनुसंधान समान स्तर के नहीं है, वशिषज्ञों को दल में सगठति होकर कार्य करने की आदत नहीं है और प्रत्येक अनुसशासन एवं सकाय के अन्तर्गत एक वभिाग के इर्द-गर्दि अपने स्वार्थो की रचना कर सकता है। ''

अर्न्तअनुशासनीय कार्य पद्धति की एक प्रमुख समस्या तथ्य सामग्री के संकलति संगठति एवं प्रस्तुत करने की प्रक्रयिा सम्बन्धी है। अर्न्तअनुशासनीय शोध में वभिन्नि वज्ञिानों द्वारा तथ्य सामग्री को इकठ्ठा करने, उनको प्रस्तुत करने तथा उसकी रपिोर्ट तैया करने की प्रक्रयिा अलग-अलग है। जैसे एक समाजशास्त्री, एक अर्थशास्त्री और एक मनोवैज्ञानकि इन तीनों के द्वारा जो आंकड़े सामने आयेंगे तब यह समस्या खड़ी होना स्वाभावकि ही है कि उनमे समन्वय कसि प्रकार स्थापति कयिा जाये। कुछ बातें एक दूसरे से वरिोधाभासी प्रतीत होगी, कुछ बाते कोरी कल्पना सी लगेगी। मान लयिा जाये कि उनमें समन्वय भी होगा तो भी एक वकिट समस्या और खड़ी हो सकती है। जनिका समाधान ढूंढना करीब-करीब असम्भव सा है। वह यह है कि कभी-कभी वभिन्नि वशिषज्ञों में से एक की सामग्री को अनुसंधान में अधकि स्थान मलिता है तो दूसरें का मात्र जक्रि कर दयिा जाता है तथा संघर्ष जैसे स्थति उत्पन्न हो सकती है, तथा परस्पर मनमुटाव, घृणा, राग-द्वेष की प्रवृत्तयिॉ उत्पन्न हो जाती है, जो कि अनुसंधान के लिए आवंछनीय है।

सुझाव- इस प्रकार हम देखते है कि अर्न्तअनुशासनीय अनुसंधान में कार्यपद्धति की जो समस्याऐं है, उनकी सम्बन्धति करना एक कठनि कार्य है। कार्य पद्धति की इन समस्याओं को दूर करने के लिए कुछ सुझाव प्रस्तुत है -

1- वभिन्नि वज्ञिानों को अनुसंधानकर्ताओं को एक-दूसरे के प्रति समझदारी तथा सहानुभूति का रूख अपनाना चाहयि ताकि वे अपनी-अपनी कार्य पद्धतयिों को ही अच्छा बताकर दूसरे की अपेक्षा करने की प्रवृत्ति न रखे।

2- वशिषज्ञों को वशिाल हद्यता और उदारता का परचिय देना चाहयि, जसिसे वे समस्या के समाधान में अधकि रचनात्मक योगदान दे सकें। उनके समक्ष संकीर्ण उद्देश्य नहीं होने चाहयि और न ही क्षेत्रीय समस्याओं के समाधान के लयि अपनी पद्धतयिों को सुरक्षति रखना चाहयि नहीं तो वे राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में कुछ भी योग नहीं दे सकेंगे।

3- अर्न्तअनुशासनीय अनुसंधान में अनुसंधानकर्ताओं को अन्य वज्ञिानों की पद्धतयिों को ग्रहण करने

की रूचि एवं इच्छा होनी चाहिए ताकि समन्वय की समस्या का हल निकल सके।

4- अर्न्तअनुशासनीय शोध का कार्य पद्धति की समस्याओं को दूर करने के लिए अनुशासनयुक्त और सम्मिलित प्रयास की आवश्यकता है।

5- हमें शैक्षणिक विभागों के निरिंकुज विशिषीकरण को दूर करना होगा और अपने कार्य का प्रसंग तथ उससे भी अधिक समस्या के अनुसार करना होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1- कोली, लक्ष्मी नारायण (2017) (2) ''रिसर्च मैथडोलॉजी'' Y.K. Publishers, Agra.

2- आहुजा, राम (2003) ''सामाजिक सर्वेक्षण एवं अनुसंधान' Rawat Publication, Jaipur

3- कपिल एच. के. (2012) ''अनुसंधान विधियां व्यवहारिक विज्ञानों में'' Rakhi Prakashan, Agra.

Goode & Hatt (1952) Methods in Social Research, New York: McGraw Hill. Jahoda et. al. (1951) Research methods in Social Scienes.

4- फाड़िया, डॉ. बी. एल. (2017) ''शोध पद्धतियां'' Sahitaya Bhawan Publication.

⊡ ⊡ ⊡

EXCLUDE CUSTOM MATCHES	OFF
EXCLUDE QUOTES	ON
EXCLUDE BIBLIOGRAPHY	ON